आओ एक बनायें चक्कर

बाल कविताओं का संकलन

हाऊ हाऊ हप्प

हाऊ हाऊ हप्प
एक सुनाऊं गप्प
बाबाजी की दाढ़ी
झरबेरी की झाड़ी
उस दाढ़ी के अन्दर
घुसे बीसियों बन्दर
करते रहते खों खों खों
यूहीं बीते बरसों
हाऊ हाऊ हप्प
तुम सुनाओ गप्प

गंगासहाय प्रेमी

एक बुढ़िया

कहीं एक बुढ़िया थी जिसका
नाम नहीं था कुछ भी
वह दिन भर खाली रहती थी
काम नहीं था कुछ भी।

काम न होने से उसको
आराम नहीं था कुछ भी
दोपहरी दिन रात सबेरे
शाम नहीं था कुछ भी।

निरंकारदेव सेवक

एक खवैया दो परसैया

एक खवैया दो परसैया
एक परोसे बड़ा सुहारी
एक परोसे सब तरकारी
राम भरोसे खाय खवैया
एक खवैया दो परसैया।

एक परोसे दायें बायें
एक परोसे बायें दायें
हंसे देख कर लोग लुगैया
एक खवैया दो परसैया।

स्वर्ण सहोदर

टेसू राजा बीच बज़ार

टेसू राजा बीच बज़ार, खड़े हुए ले रहे अनार।
इस अनार में कितने दाने? जितने हों कम्बल में खाने।
कितने हैं कम्बल में खाने? भेड़ भला क्यूं लगी बताने।
एक झुंड में भेड़ें कितनी? एक पेड़ पर पत्ती जितनी।
एक पेड़ पर कितने पत्ते? जितने धोबी के घर लत्ते।
धोबी के घर लत्ते कितने? कलकत्ते में कुत्ते जितने।
बीस लाख तेईस हज़ार दाने वाला एक अनार।
टेसू राजा कहें पुकार, लाओ मुझको दे दो चार।

निरंकारदेव सेवक

जामुन

पौधा तो जामुन का ही था
लेकिन आये आम
पर जब खाया तो यह पाया
ये तो हैं बादाम।

जब उनको बोया ज़मीन में
पैदा हुए अनार
पकने पर हो गये संतरे
मैंने खाये चार।

श्रीप्रसाद

राम सहाय

क्यों जी बेटा राम सहाय
इतनी जल्दी कैसे आये
अभी तो दिन के दो ही बजे हैं
कहो आज कल बड़े मज़े हैं।

पकौड़ी गीत

आलू की पकौड़ी दही के बड़े
मुन्नी की चुन्नी में तारे जड़े

मूंग की मगौड़ी कलमी बड़े
मंगू की छत पर दो बन्दर लड़े

खस्ता कचौड़ी कांजी के बड़े
गप्पू जो फिसले तो उल्टे पड़े

रामकृष्ण शर्मा खद्दरजी

अगर मगर

अगर मगर दो भाई थे
लड़ते खूब लड़ाई थे।
अगर मगर से छोटा था
मगर अगर से खोटा था।

अगर मगर कुछ कहता था
मगर नहीं चुप रहता था।
बोल बीच में पड़ता था
और अगर से लड़ता था।

अगर एक दिन झल्लाया
गुस्से में भर कर आया।
और मगर पर टूट पड़ा
हुई खूब गुत्थम गुत्था।

छिड़ा महाभारत भारी
गिरी मेज़ कुर्सी सारी।
मां यह सुनकर घबराई
बेलन ले बाहर आई।

दोनों के दो दो जड़कर
अलग दिये कर अगर मगर।
खबरदार जो कभी लड़े
बन्द करो यह सब झगड़े।

एक ओर था अगर पड़ा
मगर दूसरी ओर खड़ा

निरंकरदेव सेवक

सभी कुओं में पड़ गई भांग

सभी कुओं में पड़ गई भांग,
बकते हैं सब ऊट पटांग

बिल्ली करती 'ढेंचू ढेंचू'
गधा कर रहा 'म्याऊं म्याऊं'
चूहा आगे बढ़ चिंघाड़े,
हाथी कहता 'मैं गुर्राऊं'
कोयल बोले 'कुकडू कूं कूं'
और गुटरंगू देता बांग

सभी कुओं में पड़ गई भांग
बकते हैं सब ऊट पटांग।

उमाकांत मालवीय

खड़े-खड़े बेढंगी बातें

खड़े-खड़े बेढंगी बातें, हांक रहे हैं टेसूरा।
जमा खूब छोटे बच्चों पर, धाक रहे हैं टेसूरा
बच्चे लगे खेल में अपने, भूल गये टेसूरा को।
कमरे में बैठे खिड़की से, झांक रहे हैं टेसूरा
खड़े-खड़े बेढंगी बातें, हांक रहे हैं टेसूरा।

निरंकारदेव सेवक

बन्दर भूप

गया खेत में बन्दर भाग
चुट्टर मुट्टर तोड़ा साग
आग जलाकर चट्टर मट्टर
साग पकाकर खद्दर बद्दर
सापड़ सूपड़ खाया खूब
पोंछा मुंह उखाड़कर दूब
चलनी बिछा ओढ़कर सूप
डटकर सोये बन्दर भूप।

सत्यप्रकाश कुलश्रेषठ

पतंग

सर सर सर सर उड़ी पतंग
फर फर फर फर उड़ी पतंग

इसको काटा
उसको काटा
खूब लगाया
सैर सपाटा

अब लड़ने में जुटी पतंग
अरे कट गई, लुटी पतंग।

सोहनलाल द्विवेदी

बन्दर

बन्दर नहीं बनाते घर
घूमा करते इधर-उधर।
आकर कहते 'खों-खों-खों
रोटी हमें न देते क्यों?
छीन-झपट ले जायेंगे
बैठ पेड़ पर खायेंगे।'

निरंकारदेव सेवक

लाल टमाटर

लाल टमाटर! लाल टमाटर! मैं तो तुमको खाऊंगा।
अभी न खाओ, मैं कुछ दिन में और अधिक पक जाऊंगा।

लाल टमाटर! लाल टमाटर! मुझको भूख लगी है भारी।
भूख लगी है तो तुम खा लो यह गाजर मूली सारी।

लाल टमाटर! लाल टमाटर! मुझको तो तुम भाते हो।
तुमको जो अच्छा लगता है उसको तुम क्यों खाते हो?

लाल टमाटर! लाल टमाटर! अच्छा तुम्हें न खाऊंगा।
मगर तोड़कर डाली पर से, अपने घर ले जाऊंगा।

निरंकारदेव सेवक

गाड़ी करती छुक छुक छुक

गाड़ी करती छुक छुक छुक
लम्बू कहता रुक रुक रुक
डिब्बा कहता घुस घुस घुस
लम्बू चढ़ गया चुप चुप चुप
इंजन बोला कू. . . . ऊ. . . . कू. . .
गाड़ी चल दी छुक छुक छुक।

आगे थी एक भैंस खड़ी,
गाड़ी से वो नहीं डरी,
गाड़ी रुक गई, चूं. . . . चर्र,
भैंस गिर पड़ी धड़ाम ढर्र।

गाड़ी चल दी छुक छुक छुक,
आगे आया बरबटपुर
गाड़ी रुक गई चूं. . . . चर्र।

लम्बू था बिना टिकिट
उतर के भागा, टिक टिक टिक
आगे जाकर पकड़ा गया
बिना टिकिट का मज़ा आ गया।

गाड़ी चल दी छुक छुक छुक
इंजन करता कूं. . . . ऊ. . . .
गाड़ी हो गयी छूं. . . . ।

घनश्याम तिवारी

गंजूराम पटेल

यह है गंजूराम पटेल
लगा रहा था सिर में तेल
छूट गयी इतने में रेल

अवधेश कुमार

चूहो। म्याऊं सो रही है

घर के पीछे
छत के नीचे
पांव पसारे
पूंछ संवारे
देखो कोई
मौसी सोई
नासों में से
सांसों में से
घर्र घर्र घर्र घर्र हो रही है
चूहो! म्याऊं सो रही है

बिल्ली सोई
खुली रसोई
भरे पतीले
चने रसीले
उलटो मटका
देकर झटका
जो कुछ पाओ
चट कर जाओ

आज हमारा दूध दही है
चूहो! म्याऊं सो रही है

मूंछ मरोड़ो
पूंछ सिकोड़ो
नीचे उतरो
चीज़ें कुतरो
आज हमारा
राज हमारा
करो तबाही
जो मनचाही
आज मची है
चूहा शाही

डर कुछ चूहों को नहीं है
चूहो! म्याऊं सो रही है

धर्मपाल शास्त्री

चूहेदानी में शेर

चूहेदानी में एक शेर
खाने पड़ते सूखे बेर
वज़न रह गया ढाई सेर

अवधेश कुमार

चूहा

वह देखो वह आता चूहा
आंखों को चमकाता चूहा
मूंछों में मुस्काता चूहा
लंबी पूंछ हिलाता चूहा
मक्खन रोटी खाता चूहा
बिल्ली से डर जाता चूहा

निरंकारदेव सेवक

छः साल की छोकरी

छः साल की छोकरी
भरकर लाई टोकरी।
टोकरी में आम हैं
नहीं बताती दाम है।

दिखा दिखाकर टोकरी
हमें बुलाती छोकरी।
हमको देती आम है
नहीं बताती नाम है।

नाम नहीं अब पूछना
हमें आम है चूसना।

रामकृष्ण शर्मा खद्दर जी

पाठशाला

रामू बोला घोड़े से
ए घोड़े गिनती तो गिन
घोड़ा पोथी लेकर बोला -
हिन-हिन-हिन, हिन-हिन-हिन-हिन।

रामू बोला गधे से,
गधे पढ़ क ख ग घ यों।
गधा पोथी लेकर बोला -
चीपों-चीपों-चीपों।

रामू बोला चूहे से -
चूहे पढ़ अ आ इ ई।
चूहा पोथी लेकर बोला -
चीं-चीं-चीं, चीं-चीं-चीं-चीं।

रामू बोला कुत्ते से -
कुत्ते पढ़ उ ऊ ए ओ।
कुत्ता पोथी लेकर बोला -
भों-भों-भों, भों-भों-भों-भों।

सोहनलाल द्विवेदी

डिंगडांग-डिंगडांग

डिंगडांग-डिंगडांग-डिंगडांग-डिंग
एक-दो-तीन-चार दस तक गिन
उसके बाद फिर डिंगडांग-डिंग

अवधेश कुमार

दादा जी

दादा जी नाराज़ हैं।
रोज़ रहा करते हैं वे क्या आज हैं!

पता नहीं चल पाता है कि वे किससे नाराज़ हैं
बच्चों से नाराज़ हैं कि बूढ़ों से नाराज़ हैं
चतुरों से नाराज़ हैं कि मूढ़ों से नाराज़ हैं
कचरों से नाराज़ हैं कि कूड़ों से नाराज हैं
चोटी से नाराज़ हैं कि जूड़ों से नाराज़ हैं
दादा जी नाराज़ हैं।
रोज़ रहा करते हैं वे क्या आज हैं!

दादा जी नाराज़ नहीं।
उन्हें हुआ है क्या यह कोई राज़ नहीं
गुमसुम हैं अपने कमरे में
उन्हें बुलाये जो ऐसी आवाज़ नहीं।
गुज़र गये उनकी दुनिया के मेले ठेले
दादी नहीं रहीं तब से हैं और अकेले।

कहां चले ऐ बच्चो उनको साथ लो
अपनी नरम हथेली में अब उनका हाथ लो
ले जाओ उन बागीचों के फूलों में
अपने साथ झुलाओ उनको झूलों में
फिर देखो लड्डू की चोरी करने में
साथ तुम्हारे वे भी चल फंस सकते हैं

हंसते हो जिस तरह
उस तरह वे अब भी हंस सकते हैं।
चूको मत वे कल न रहेंगे आज है
भूल जाओ कि दादा जी नाराज़ हैं।

नवीन सागर

चक्कर

आओ एक बनायें चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
फिर उस चक्कर में इक चक्कर
और बनाते जायें जब तक
ऊब न जायें थक कर।

फिर सबसे छोटे चक्कर में
म्याऊं एक बिठाएं,
और बाहरी हर चक्कर में
चूहों को दौड़ाएं।

दौड़-दौड़ कर सभी थकें
हम बैठें मारे मक्कर,
नींद लगे हम सो जायें
वे देखें उझक-उझक कर

आओ एक बनाएं चक्कर।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

पान की डलिया

पान की डलिया क्यों लटकी?

लटकी है तो लटकी है
तेरा इसमें जाता क्या
छाता तेरा उड़ गया
उड़कर रस्ता मुड़ गया
मुड़ गया तो मुड़ गया
तेरा कौन सा गुड़ गया
चला गया तो गया चला
तू भी अपने घर को जा।

तेजी ग्रोवर

ईंची मींची, आंखें भींची

ईंची मींची, आंखें भींची
आया लटकू, बैठा मटकू
खट खट खटका, फूटा मटका
खीं खीं बिल्ली टिल्ली लिल्ली
उड़े झील से बगुले राजा
मछली लगी बजाने बाजा
पेट पीटकर मेंढक भैया
लगे नाचने ता ता थैया

आचार्य अज्ञात

इल्ली-उल्ला

खा के रसगुल्ला
हमने किया कुल्ला
पानी में उठा बुल्ला
देख रहे मुल्ला
इल्ली उल्ला।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

बतूता का जूता

इब्न बतूता पहन के जूता
निकल पड़े तूफान में,
थोड़ी हवा नाक में घुस गयी
घुस गयी थोड़ी कान में।

कभी नाक को, कभी कान को
मलते इब्न बतूता।
इसी बीच में निकल पड़ा
उनके पैरों का जूता।

उड़ते-उड़ते जूता उनका
जा पहुंचा जापान में।
इब्न बतूता खड़े रह गये
मोची की दुकान में।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

एक पान का पत्ता

एक पान का पत्ता
जा पहुंचा कलकत्ता
पकड़े आपना मत्था
मिला वहां पर कत्था
आगे मिली सुपारी
सबने की तैयारी
पहुंचे फिर सब पूना
लगा वहां पर चूना

सूर्यकुमार पाडेय

गोलू के मामा

गोलू के मामा आये
सब देख रहे मुंह बाये।

मुंह उनका है गुब्बारा
था किसने उन्हें पुकारा,
नारंगी उनको भाये
गोलू के मामा आये।

वे पूरब से आते
गोलू से गप्प लड़ाते
हौले से उसे सुला कर
फिर पश्चिम को उड़ जाते

सच बात अगर मैं बोलूं
तो पोल पुरानी खोलूं,
सूरज का फटा पजामा
सिलते गोलू के मामा।

पर जाने क्या जादू है
रहते हैं सब पर छाये,
सब देख रहे मुंह बाये
गोलू के मामा आये।

ये बड़े दिनों में आये
झोले में हैं कुछ लाये।
हमको तो पता चले तब
जब गोलू हमें खिलाये।

लो दिखा-दिखा नारंगी
बन जाते एक बताशा,
यूं सबको देते झांसा
करते ये खूब तमाशा।

हर पंद्रह दिन में कैसे
आ जाते बिना बुलाये,
मैं देख रहा मुंह बाये
गोलू के मामा आये।

रमेशचन्द्र शाह

कितनी लंबी है सड़क

कितनी लंबी है सड़क
कितना ऊंचा है पहाड़
कितनी छोटी है चिड़िया
पेड़ है कितना बड़ा

तेज़ कितनी है नदी
पत्थर कितना गोल है
घास है कितनी हरी
फूल कितना लाल है

कृष्ण कुमार

एक खिलाड़ी तगड़ा है

एक खिलाड़ी तगड़ा है
एक पैर से लंगड़ा है
बूढ़ा एक पुराना है
एक आंख से काना है
एक बिलैया ऊंची है
एक कान से बूंची है

स्वर्ण सहोदर

घूम हाथी झूम हाथी

घूम हाथी झूम हाथी

राजा झूमे रानी झूमे झूमे राजकुमार
घोड़ा झूमे फौजें झूमें झूमे सब दरबार
हाथी झूम झूम झूम हाथी घूम घूम घूम।

धरती घूमे बादल घूमे घूमे चांद सितारे
चुनिया घूमे मुनिया घूमे घूमें राज दुलारे
हाथी झूम झूम झूम हाथी घूम घूम घूम।

राज महल में बांदी झूमे पनघट पर पनिहारी
पीलवान का अंकुस झूमे सोने की अम्बारी
हाथी झूम झूम झूम हाथी घूम घूम घूम।

डॉ. विद्याभूषण 'विभु'

नारंगी रंग की नारंगी

नारंगी रंग की नारंगी
बेच रहा फलवाला गाकर
और बजाता है सारंगी

चमक रहा है छिलका पीला
सुन्दर फल है बड़ा रसीला
प्यास बुझे मन खुश हो जाता
ढीली तबियत होती चंगी

सुधा चौहान

डुब्बक डूब

तेरी नदी में डुब्बक डूब
जैसे पानी में खेले मछली
ऐसे उछलें हम भी खूब।
जैसे पानी में पत्थर फेंके
और उठें बलबूले खूब।
जैसे पानी में हम तैरायें
ऐ कग्गज की नावें खूब।

नरेन्द्र मौर्य

धम्मक धम्मक

धम्मक धम्मक जाता हाथी
धम्मक धम्मक आता हाथी

अपनी सूंड़ उठाता हाथी
अपनी सूंड़ गिराता हाथी
जब पानी में जाता हाथी
भर-भर सूंड़ नहाता हाथी

धम्मक धम्मक जाता हाथी
धम्मक धम्मक आता हाथी
कितने केले खाता हाथी
यह तो नहीं बताता हाथी

धम्मक धम्मक जाता हाथी
धम्मक धम्मक आता हाथी।

प्रयाग शुक्ल

जुम्मन कक्का

बड़े बहादुर
जुम्मन कक्का
उनका घोड़ा
अड़ियल पक्का

पीकर हुक्का
अंधा चुक्का
घोड़े को दे
मारा मुक्का

घोड़ा चौंका
हक्का बक्का।

घोड़ा उछला
भागा सरपट
कक्का चीखे
किस्मत चौपट

घोड़ा भागा
देकर धक्का

कक्का पट्टी
करके रोये
घोड़ा बेचा
जमकर सोये

छूट गया था
उनका छक्का।

वसु मालवीय

कहानी

बहुत दिनों की बात है बच्चो
बूढ़ा एक शहर था
उसके बीचोंबीच हमार
फटा-पुराना घर था।

फटा पुराना घर था लेकिन
हम सब नये-नये थे
अल्लादिया चचा लड़कों के
नेता नये-नये थे।

आशा भड़भूंजे के घर से
लगा हुआ जो घर था
अल्लादिया चचा ने उसमें
डाला डेरा भर था।

सुबह-शाम वे साथ हमारे
ऊधम खूब मचाते
नये एक-से-एक खेल वे
रोज़ हमें सिखलाते।

उनके हाथों में जादू था
क्या-क्या नहीं बनाते
अल्लादिया खिलौनेवाले
थे वे यूं कहलाते।

पर उनके हाथों से बढ़कर
हम थे उनको प्यारे
बावन बच्चों का कुटुम्ब था
सबके वे रखवारे।

हमें खिलौने बेच हमारे
ही पैसों की आई
खुश होते थे चचा बहुत ही
हमको खिला मिठाई।

पटिया पर जम जाते आकर
लगा शहर की फेरी
किस्से-कहानियों की फिर तो
लगती जाती ढेरी।

दुनिया बदल रही है बच्चो!
कभी-कभी वे कहते
दुनिया बदल रही है बच्चों
मेरे रहते-रहते।'

बावन बच्चों के चाचा की
सालगिरह जब आई
पहुंचे उन्हें बधाई देने
बनारसी हलवाई।

आगे-आगे बहन जलेबी
पीछे लड्डू भाई।
और बीच में रसगुल्लों के
बैठी रबड़ी माई।

कितनी बार किया मुंह मीठा
हमने उनका अपना
अब तो हम खुद बुढ़ा गये हैं
देख रहे हैं सपना।

बच्चो अल्लादिया चचा के
किस्से तो इतने हैं
दुनिया भर के बगीचों में
फूल खिले जितने हैं।

कहां-कहां तक उन्हें गिनायें
याद आ रही नानी
खत्म नहीं होती थी जिसकी
कोई कभी कहानी।

रमेशचन्द्र शाह

खट-खट

एक था खट-खट
बहुत ही नटखट।
एक दिन झटपट
गया वो पनघट।
वहां पर देखा
उसने जमघट।

जमघट में हो गई
उसकी खटपट।
लोगों ने बोला
चल हट चल हट।
पर अड़ गया खट-खट,
पिट गया पट पट
पट पट पट पट
कट कट कट कट
ताड़ा डाड़ा डाड़ा डुम्ब।

और फिर भागा
खटपट झटपट
झट झट झट झट
पट पट फट फट
झटपट खटपट।

सुबीर शुक्ला

बाजार

आडड़ बाडड़ लगा बाजार
लोग हैं आये खूब हजार।

हल्दी सब्ज़ी मटका अचार
बैठ करे हैं सोच विचार।

भीड़ भड़क्का धक्कम धक्का
ठाका ठम्मम झम्मम झटका।

बगरी हल्दी, फूटा मटका
रोई सब्ज़ी, रोया अचार

लोग भी रोये खूब हजार।

सवाल

एक बार बोले दादा जी,
'दो में पांच घटाओ,
और बचे जो, उतने लड्डू
मुझसे लेकर खाओ।'
बच्चे बोले - 'दादा जी, मत
बुद्धू हमें बनाओ,
दो में पांच घटेगा कैसे;
लड्डू हमें खिलाओ।'

नानी तेरी मोरनी

नानी तेरी मोरनी को मोर ले गये
बाकी जो बचा था काले चोर ले गये

खाके पीके मोटे होके चोर बैठे रेल में
चोरों वाला डिब्बा कटके पहुंचा सीधा जेल में

उन चोरों की खूब ख़बर ली मोटे थानेदार ने
मोरों को भी खूब नचाया जंगल की सरकार ने

अच्छी नानी प्यारी नानी रूसा रूसी छोड़ दे
जल्दी से इक पैसा दे दे तू कंजूसी छोड़ दे

नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए
बाकी जो बचा था काले चोर ले गए

एक दिन

एक दिन
अल्लेगा पल्लू का इजिगाबाजा
बज गया, तो वो जग गया
और उसने मारी एक छलांग
फिर उसने मारी एक कुलाट
फिर उसने बना दी ये किताब।

सुबीर शुक्ला

गाय की प्यास

कही पे खा ली एक गाय ने तीखी-तीखी घास,
मत पूछो ये मुझसे कैसी लगी थी उसको प्यास।

दो घूंट में पीया उसने, कुंआ भर के पानी,
लेकिन देखो बात अजीब, प्यास अभी न मानी।

कुंआ छोड़ के भागी गाय, नद्दी में मुंह डाला,
तीन घूंट में, देखो उसने, तट खाली कर डाला।

नदी छोड़ के निकली थी वो दूर समुन्दर पार,
एक घूंट तो ले चुकी है, अभी बचे हैं चार।

सुबीर शुक्ला

मुर्गी बोली कुकडूं-कूं

मुर्गी बोली कुकडूं-कूं
अपना अंडा किसको दूं?
जो पैसे दे उसको दूं।

मुर्गे की चाल

मुर्गे की थी कलगी लाल
पर उसकी थी लंगड़ी चाल
मां ने घर से दिया निकाल

अवधेश कुमार

रज्जू और कद्दू

रज्जू के बेटे ने
मिट्टी के ढेरों में
कद्दू के कई बीज
बोये, बोये, बोये।

रात का अंधेरा था
चूहों का डेरा था
दो चूहे बीज खाने
गये, गये, गये।

सुबह को न ढेर थे
न कद्दू के बीज थे
दो चूहे मोटे हो के
सोये, सोये, सोये।

प्रतिभा नाथ

बकरी

अरे, अरे, क्या करती बकरी
घास पराई चरती बकरी
बकरी बकरी उधर न जा
इधर चली आ, आ आ आ
वहां पकड़ ली जाएगी
में-में-में चिल्लाएगी

निरंकारदेव सेवक

नेहरू चाचा गिर पड़े।

नेहरू चाचा गिर पड़े।
एक रोज़ वह दिन ढले,
घोड़े पर चढ़ कर चले,
हंटर को फटकारते,
कोड़े कस कर मारते,
देख रहे बच्चे खड़े।
नेहरू चाचा गिर पड़े।

घोड़ा भागा तेज़ जब,
बचकर भागें लोग सब,
छूटा हाथ लगाम से,
नीचे गिरे धड़ाम से,
ठेले वाले से लड़े।
नेहरू चाचा गिर पड़े।

निरंकारदेव सेवक

बहुत ज़ुकाम हुआ नन्दू को

बहुत ज़ुकाम हुआ नन्दू को
एक रोज़ वह इतना छींका
इतना छींका, इतना छींका
इतना छींका, इतना छींका।
सब पत्ते गिर गये पेड़ के
धोखा हुआ उन्हें आंधी का।

रामनरेश त्रिपाठी

क्या सज-धज कर चली बरात

क्या सज-धज कर चली बरात,
जिसमें सिर्फ़ आदमी सात।
आगे मकना हाथी तीस, उनके पीछे भालू बीस।
कातल घोड़े साठ हज़ार, जिन पर कोई नहीं सवार।
बन्दर पूरे पैंतालीस, दांत निपोरे काढ़े खीस।
कुत्ते बिल्ली सैंतालीस, चूहे और छछूंदर बीस।
मेंढक तीस बजाते ढोल, भरी ढोल में जिनके पोल।
झींगुर साठ बजाते झांझ, जिनकी मात सदा की बांझ।
सत्तर नाग बजाते बीन, जिनके सुर की तान महीन।
नब्बे मच्छर लिए मृदंग, परमेश्वर से बढ़कर नंग।
आगे-पीछे चली बरात, जिसमें सिर्फ़ आदमी सात।

निरंकारदेव सेवक

गुलगुला

छुट्टी हुई खेल की
चढ़ी कढ़ाई तेल की
सुर-सुर-उठता बुलबुला
छुन-छुन सिकता गुलगुला।
भुरभुरा और पुलपुला
मीठा-मीठा गुलगुला
गुलगुला जी गुलगुला
बड़े मज़े का गुलगुला।

रामकृष्ण शर्मा खद्दर जी

रसगुल्ला

उब-उब रस से रस का बुल्ला
उजला-उजला गुल्लक गुल्ला
मुंह को कर दो पूरा खुल्ला
खाओ गप-गप-गप रसगुल्ला।

रामबचन सिंह 'आनन्द'

पारुल चलती चांद चलता

पारुल चलती चांद चलता
चलता पारुल संग
पारुल ठहरी चांद ठहरा
ठहरा पारुल संग
पारुल दौड़ी चांद दौड़ा
दौड़ा पारुल संग
पारुल ठिठकी चांद ठिठका
ठिठका पारुल संग

पारुल बोली पापा कैसे
पापा कैसे क्या बतलायें
ऐसे ही वो ऐसे

गुरबचन सिंह

मछली रानी

मछली रानी मछली रानी
बोल नदी में कितना पानी

थोड़ा भी है ज़्यादा भी है
मैं कितना बतलाऊं पानी
मुझको तो है थोड़ा पानी
पर तुमको है ज्यादा पानी
हम लोगों का तो यह घर है
यहां पिता हैं, मां है, नानी

मछली रानी मछली रानी
बोल नदी में कितना पानी।

ताकधिना

अक्कड़ बक्कड़ ताकधिना
रोता शेर शिकार बिना
अरे शेर मत रोओ तुम
चलो उठो मुंह धोओ तुम
दौड़ो धूपो काम करो
यों मत भूखे यहां मरो
तुम शिकार पर जाओगे
वरना, सभी पकड़कर दुम
बोलेंगे बकरी हो तुम।

वसु मालवीय

चलचित्र

1. मुख्य पृष्ठ पर बनाए बड़े गोले, और उस पर इस प्रकार | बनाये गए खांचों को काटो.

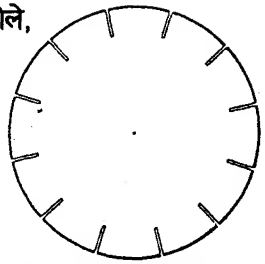

2. चित्र के बीच मे बनाये बिंदु को पिन या काटि से छेद करके एक पेंसिल के सिरे पर लगायें। यह आपका हत्था है

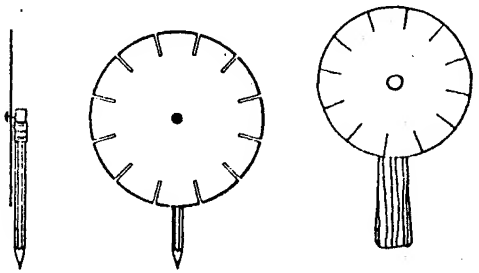

3 हत्थे को पकड़ कर गोले को घुमाओ और खांचों में से सामने दर्पण को देखो। आपको रस्सी कूदता एक बच्चा दिखेगा

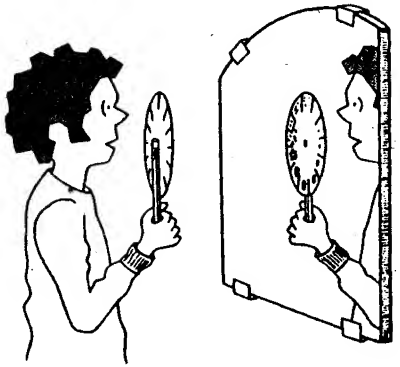

(चित्र मे आप रंग भी भर सकते हैं)

एकलव्य,भोपाल के माध्यम से संचालित बाल गतिविधि कार्यक्रम,
ई-4 / 89, अरेरा कालोनी, भोपाल द्वारा प्रकाशित (अप्रैल 1990)